भाकृअनुप-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय केंद्र, पालमपुर द्वारा हिन्दी सप्ताह के अन्तर्गत हिंदी संगोष्ठी एवं हिंदी कार्यशाला आयोजित

भाकृअनुप-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय केंद्र, पालमपुर द्वारा 14 से 20 सितंबर 2025 तक हिंदी सप्ताह का सफल आयोजन किया गया। इस सप्ताह के दौरान हिंदी के महत्व को उजागर करने और इसके उपयोग को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें एक महत्वपूर्ण हिंदी संगोष्ठी और एक कार्यशाला शामिल रहे।

हिंदी संगोष्ठी: राष्ट्रभाषा के महत्व पर गहन चर्चा

हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित संगोष्ठी दिनांक 15.09.2025 में हिंदी के महत्व और राष्ट्रभाषा के रूप में इसकी भूमिका पर गहन चर्चा हुई। डॉ. गोरख मल, प्रमुख क्षेत्रीय केंद्र ने अपने संबोधन में हिंदी जागरूकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि आज़ादी के 78 साल बाद भी हिंदी के प्रति अपेक्षित जागरूकता नहीं आ पाई है, यही कारण है कि हिंदी सप्ताह और पखवाड़े जैसे कार्यक्रम आवश्यक हैं। डॉ. गोरख मल, प्रमुख क्षेत्रीय केंद्र ने बताया कि भारत में 60% से अधिक लोग हिंदी जानते हैं, जबकि अंग्रेजी बोलने वालों की संख्या बहुत कम है। उन्होंने कहा कि 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक मजबूत राष्ट्रभाषा का होना अत्यंत आवश्यक है और हिंदी इस दिशा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

इस संगोष्ठी के मुख्य वक्ता, भारत संचार निगम लिमिटेड (BSNL) के श्री प्यार चंद्र, सेवानिवृत्त मंडल अधिकारी रहे। उन्होंने "हिंदी स्वरूप व इतिहास" विषय पर अपना विस्तृत व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया था, लेकिन दुर्भाग्यवश इसे राष्ट्रभाषा का दर्जा नहीं मिल सका। उन्होंने यह भी सलाह दी कि किसी भी भाषा को सीखने में संकोच नहीं करना चाहिए और हिंदी को एक प्रभावी संपर्क भाषा के रूप में विकसित करने की क्षमता पर जोर दिया। इस अवसर पर डॉ. रिंकु शर्मा, प्रधान वैज्ञानिक, ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। संगोष्ठी के अंत में, डॉ. बीरबल सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, ने सभी प्रतिभागियों और वक्ताओं का धन्यवाद ज्ञापन किया।

हिंदी कार्यशाला: राजभाषा के कार्यान्वयन पर प्रकाश

हिंदी सप्ताह के अंतर्गत आयोजित एक और महत्वपूर्ण कार्यक्रम हिंदी कार्यशाला दिनांक 18.09.2025 को आयोजित की गई। । इस कार्यशाला का उद्देश्य राजभाषा हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देना और कर्मचारियों को इसके महत्व से अवगत कराना है। कार्यशाला की शुरुआत में, डॉ. गोरख मल, प्रमुख क्षेत्रीय केंद्र ने संस्थान में चल रहे राजभाषा कार्यान्वयन कार्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि केंद्र में धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले सभी पत्र द्विभाषीय रूप से तैयार किए जा रहे हैं और पत्राचार का कार्य 100% हिंदी में हो रहा है। उन्होंने ऐसी नियमित कार्यशालाओं की सराहना की, जो हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देने में सहायक हैं।

इस कार्यशाला में मुख्य वक्ता के रूप में हिमाचल प्रदेश राज्य विद्युत बोर्ड लिमिटेड, पालमपुर के श्री संजय कुमार मेहरा, सेवानिवृत्त सहायक अधिशाषी अभीयंता उपस्थित रहे। उन्होंने हिंदी के इतिहास और महत्व पर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने भी इस बात पर अफसोस जताया कि 14 सितंबर, 1949 को राजभाषा बनने के बावजूद हिंदी को अभी तक राष्ट्रभाषा का दर्जा नहीं मिल पाया है। अंत में डॉ. बीरबल सिंह, प्रधान वैज्ञानिक ने सभी उपस्थित लोगों और मुख्य वक्ता का धन्यवाद किया।